अलकशतक और तिलशतक।

अर्थात्

शृङ्गाररस भरे अनेक युक्ति संयुक्त अलक और तिल पर केवल दोहा छन्दों में दो शतक।

बिलग्राम (अवध)बासी सैयद मुबारकअली उपनाम मुबारक कवि प्रणीत।

जिसको डुमराँवनिवासी नकछेदी तिवारी उपनाम अजान कवि ने रसिकजनों के चित्त विनोदार्थ प्रकाशित किया।

चिबुक कूप रसरी अलक तिल सुचरस दृग बैल।
बारी बार सिँगार की सींचत मनमथ छैल ॥ १ ॥

अधूरा देखने से न देखना अच्छा।

काशी।

भारतजीवन यन्त्रालय में मुद्रित हुआ।

सन् १८९१ ई०।

मूल्य ~~)

भूमिका ।
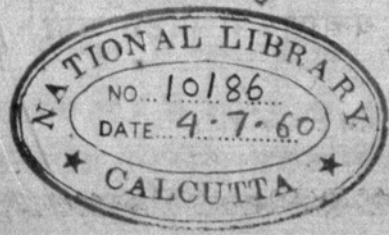
ये दोनों शतक सम्वत् १९४० में काशी कविबचनसुधा द्वारा प्रकाशित किये गये थे और साथही निवेदनपत्र भी छापा गया था कि "अलकशतक" मुझे केवल ८५ दोहा मिला है जिन साहबों के पास समग्र पुस्तक हो सूचित करें पूर्ण रूप से पुस्तकाकार प्रकाशित किया जाय पर न्यूनाधिक आठ वर्ष व्यतीत हो गये किसी ने सांस तक न लिया। निदान जब मैंने सोचा कि इसी मृग तृष्णा में यह अमूल्य रत्न लोप होने चाहता है तो यह बात ठहरी कि जो प्रति उपस्थित है प्रकाशित की जाय, फिर जब समग्र मिलैगी दूसरी आवृत्ति में मुद्रित की जायगी। इन शतकों के रचयिता बिलग्राम (अवधवासी) सैयद मुबारकअली उपनाम मुबारक सम्वत् १६४० में अरबी, फारसी, संस्कृत और भाषा के बड़े पण्डित प्रगट हुये हैं। कवियों के कथन से जाना जाता है कि इसी प्रकार से दशों अंग पर दश शतक इन्होंने रचा है जिनमें आठ शतकों का समय के हेरफेर से पता तक नहीं है किन्तु ये दोनों शतक श्रीमान् चत्रियकुल-

भूषण विविध विद्याविभूषण बाबू नर्मदेश्वरप्रसाद सिंहजी साहब रईस दिलीपपुर बिहिया (आरा) द्वारा मिले थे जो आपलोगों की सेवा में समर्पित हैं। सम्प्रति भाषा काव्य विषयक नवीन तथा प्राचीन पुस्तकों के प्रकाशार्थ अहर्निश उद्योग किया जा रहा है, बहुत सी प्राचीन पुस्तकें जिनका पाठकों ने नाम तक नहीं सुना होगा बुन्देलखण्ड बघेलखण्ड और रुहेलखण्ड आदि प्रदेशों से मँगाई गई हैं जो क्रमशः प्रकाशित की ज[illegible] काव्यरस रसिकों को चाहिये कि जो नवीन व प्राचीन अप्रकाशित पुस्तकें पावें मुझे शीघ्रतर सूचित करें उनपर एक पोष्टकार्ड तक का भार नहीं दिया जायगा सब अपने व्यय से पुस्तक लिखकर उनके नाम सहित प्रकाशित कर दी जायगी। जानना चाहिये कि इस काम के लिये चार प्रेस चालीस कर्म्मचारी नियत हैं कार्य्य की उत्तमता केवल इसी प्रति से समझनी चाहिये।

आपलोगों का कृपापात्र

डुमराँव
२५-६-९१ ई० } नकछेदी तिवारी
उपनाम अजान कवि।

अलकशतक ।

दोहा ।

अतुल रूप ऊँचे महल है धन परमानन्द ।
तहाँ मुबारक चोर मन लायो अलक कमन्द ॥

अलक एक तिय मुखनिगम लख्यो मुबारक सोइ।
एकै अच्छर प्रेम को पढ़ै सो पण्डित होइ ॥२॥

धायो जा पायो नहीं अब [illegible] बिनु आकार ।
भयो मुबारक अलक तुव अलख रूप आकार ॥

बेसर लगि मुकुतानि लगि अरुझी अलक जु आय।
हेम ठाट पर दै अँडा साँपिनि सेवत जाय॥४॥

अलकमुबारकतियबदनझलकतझांकिनिसङ्क ।
मनो चन्द के बीच ते निचुस्यो जाल कलङ्क॥५॥

जगी मुबारक तिय बदन अलक ओप अति होय।
मनो चन्द के गोद में रही निसा सी सोय ॥६॥

अलक डोर मुख छबि नदी बेसरि बंसी लाइ ।
दै चारा मुकतानि को मो चित चली फँदाइ ॥

अलक मुबारक कुटिल है छुटि मुख छबि है ऐन।
घेरी मेरी मति तहाँ एरी बैरी नैन ॥ ८ ॥
चिबुक कूप में मन पर्यौ छबि जलतृषा बिचारि।
काढ़त मुबारक ताहि तिय अलक डोर सी डारि॥ ९
अलक छुटी लपटी बदन देखो दुति दृग दौरि।
चढ़ी भागतें भाल तिय मनु सिँगार की बौरि ॥१०
छुटी अलक झलकी बदन बढ़त मुबारक मोद।
खिलत बालक नाग की रहसि चन्द के गोद ॥
जल सीकर जो बदन पर डोलत अलक बिसाल।
गिर्यो मनो ससि तें सुधा पूँछ पखारत व्याल॥
गोरे गात कपोल पर अलक अडोल सोहाय ।
सोअति है सांपिनि मनो पङ्कज पात बिछाय॥
गोरे गात कपोल पर लेत मुबारक मोल ।
खटकतहियहटकतसुमनलटकतजबलटडोल ॥
छुटत मुबारक अलक तिय मुख सुखमा सरसात।
मनो राहु की रसन श्रम ससि के बीच समात॥
लगी मुबारक झुकि अलक लाल बेंदुली भाल।
लेत मोल ससितें सुधा देत मोल मनिव्याल ॥

अलक मुबारक तिय बदन झलकत झलक अपार।
चली चन्द के बीच तें मनो जमुन की धार ॥
तिय न्हात जल अलकतें चुअत नयन की कोर।
मनु खञ्जन मुख देत अहि अमृत पोंछि निचोर॥
दोनों तिय लटकाय लट लीनो मन अटकाय।
ज्योंज्योंनिछुटावतिझटकित्योंत्योंअतिलपटाय॥
टीको जरित जराय को अलक लसत तेहि पास।
मनु फनि परसत सूर कहँ प्रगटत प्रेम प्रकास॥
अटकि मुबारक मति गई लूटि सुखन की मोट।
लटा पोट ह्वै लपटिगो लटकत लटकी ओट॥
लसत मुबारक तिय अलक लगि कै भौंह कमान।
साजि मनो सरोज कर मनो नाग कै बान॥२२॥
रह्यो मुबारक अलक लगि सिंदुर विन्दु जु भाल।
चलीमोहिडसिनागिनीभयीरुधिरमुखि लाल॥
लखौ मुबारक अलक तिय मुख पर जग्यो सुहाग।
चलौ अमी प्रति चन्द पै पूँछ पटकि जनु नाग॥
छुटी अलक द्वै रंग ह्वै लगी दृगन की कोर।
खैंचत मनो खेलार मन खंजन जोरी जोर॥२६॥

तिलकपोलपरअलकाभुकिझलकतओपअपार ।
मनो मयन के बीचतें उपजी लता सिँगार॥२७॥
झलक मुबारक अलक को लसत बदन की सींव।
सेली मनसिज की मनो मेली ससि के ग्रींव ॥
अलक छुटी मुख पर रही करत डंक परबेस ।
मानहुं ससि को सूर को सांपिन कहति सँदेस॥
छूटो चन्दन भालतें अलक उपर छबि देत ।
डसी उलटि मनु नागिनी उदर बिराजत सेत॥
तिय मुख अलक बिलोकि के लहत मुबारक संच।
धनुष उतारि मनोज मनु ससि पर धरत प्रतंच ॥
छुटो मुबारक अलक तिय डोलत अधर प्रवाल।
रीझि अरुन दल पै मनो लोटत लाटत व्याल ॥
निछुटो टीको भालतें अटक्यो लट के छोर ।
मनो फिरावत मो हियो चन्द लए चक डोर ॥
चुभ्यो मुबारक चिबुक चलि अलक छरी को मूल।
तृषावन्त नागिनि चली मनहुं रूप के कूल॥३४॥
बीच मुबारक चिबुक के लपटी अलक बिराजु।
बसी चन्द बीचहि मनो व्यालिनि व्यापी आजु॥

लखी मुबारक अलक सों लांबी अलक सोहात।
मानहुं फूल बंधूक तें नागिनि निकसी जात ॥
लगि दृग अञ्जन ढिग अलक देत मुबारक मोद।
जनु सांपिनि सुत आपनो भेंटति भरि २ गोद॥
अलकें लों अञ्जन लुकी आधि दृग की बारि ।
लीलतिसांपिनिसुतमनोउगिलतिप्रेमबिचारि ॥
नासा के मुकुतानि पर लपटी अलक बिचारि।
सुधाबुन्द प्रति फनि मनो करत सुआ सो रारि॥
निरखि मुबारक अलक को मुखपर झलक अमन्द।
काढ़ि सिंगार समुद्रतें लहरि चढ़ो मनु चन्द ॥
लपटी लट लट की बदन चटकी जग की प्रीति।
चोर साहु सब बाँधिये नई नगर की रीति॥३२॥
डोलत अलक मलोल अति तिय कपोल के भाग ।
मनो चन्द के चौहटा रुचि सों नाचत नाग ॥
लसत मुबारक तिय बदन अलक नाग के रंग।
सोहत है ससि पै मनो निसि के भीतर रंग ॥
चिलक नई अलकानि की चकचौंधी चख चाहि।
बैठें उठे नसात है बिन तम तन को ताहि ॥

झुकी मुबारक अलक तिय नथ मुकुतानि लपेटि।
मनु सुक के डर सांपिनी बैठी अंग समेटि॥४६॥
बाल भाल पर अलक की झलक मुबारक झांकि।
राख्यौ जनु सब विधि सुधा मनु मृगमदतें आंकि॥
झुकी अलक तिय बदन पर सोहत स्याम सुढार।
मनहुं कामिनी की छरी ससिहिं सौंपिगो मार॥
अलक मुबारक तिय बदन छूटि लियो जग लूटि।
प्रलै रूप जनु नागिनी परी चंद पर टूटि॥४९॥
काढ़ी अलक तिय बदन पर बढ़ी मुबारक संक।
नाग रूप धरि गरल जनु भेंटत बंधु मुयंक॥
गोरे मुख पर नागिनीं बैठी लट लटकाय।
मनु मनोज पर है मनो गोफन फांसी लाय॥
तिय मेरो मन हरि लियो मुखपर लट लटकाय।
बँधी फेरि यह छूटिहै जगत लूटिहै जाय॥५२॥
छबि तहँ सारी तिय बदन सपरत नायक मैन।
दिवस दिखावत रैनसम रैन चुरावत चैन॥५३॥
स्याम अलक मुखपर परत हरत मुबारक जंत्र।
चन्दन चरचित नागिनी पढ़ति मोहिनी मंत्र॥

तिय मुख सुखमा सो दृगनि बांध्यों प्रेम अपार।
रही अलक ह्वै लगि मनो बटुरी पुतरी तार ॥
एरी देरी सवन मुख लेरी अलक बटोरि ।
मोहन नट चाहत चढ़न निरखि चीकनी डोरि॥
अलक बाल कै बदन लगि रही मुबारक राज।
चढ़े जात जल अलि मनो ससि पर सैना साजि॥
मृग नैनी कै नैनपर अलक छूटि छबि देत ।
मनहुं प्रकासी पंचसर फांसीं खंजन हेत ॥५८॥
जान्यो हम लै नागरी मुखतें अलक सकेलि ।
मनु मोसो ससि जोगतें लगी विपति की बेलि॥
तियमुख सुखमा अलक की उपमा बुन्दसमात।
मानहुं ससि कै सीसतें छूटी सिखा सुहात ॥
लसत मुवारक तिय बदन छुटी अलक रमनीय।
दई कलानिधि को मनो कालकमल कमनीय॥
कामदाम कीबो कहा कियो अलक किहिकाम।
निरखि स्यामता सो भए जग दृग तारे स्याम॥
लट लटकै तिय बदन पर को हटकै कै बार ।
मन मयूर संसार को ए हरि हार अहार ॥६३॥

कहा चढ़ायो सीस तैं अलकं नागिनी पालि ।
अति परचैगी मोहि डसि तू न बचैगी कालि ॥
काढ़ी अलक नथबीच ह्वै हौं छबि छक्यो बिचारि।
झूलत ससि पर नाग मनु हेम हिंडोरा डारि ॥
तिय ससि सी मुख पर काढ़ी तेले बढ़ो सुहाग ।
डँसत फिरत वह खलक कों अलक बटपरा नाग॥
झाकिअलकझलकनिबदन हगपलकनिछबिदेत
नाग भाजि तिय पाछ ज्यों खंजन सों करि हेत ॥
तिय माथे मुकुतावली राजत अलक अमोल ।
ससि नृप फौजन छत्र को मानहुं नाग हिंगौल॥
अलकपरी बनिताबदन लगि मुकुता मनि माल।
बढ़त सुधाकर पर मनो कविमंगल महिलाल ॥
रवि बंदत करजोरि कि पढ़त मंच कछु नारि ।
लूटी चाहत खलक कों अलक अँधेरी डारि ॥
मो मन जान्यो अलक यह बूझी नागिनिवारि ।
डसत जात अब जतन करि गारुड़ि हारे झारि ॥
मो तन तपकारी अलक कीन्हो कारी घाव ।
नारि निहारि कहा रही गारि फुलेल चढ़ाव ॥

सुधरि मुबारक तियबदन परीअलक अभिराम ।
मनो सीम पर सूत ह्वै राखी सुत हर काम ॥
छूटी चोखे अलक की छीन छबीली नाग ।
यह न पातरो मूढ़मन देखि दसन को दाग ॥
लपटी अलक प्रवेस को आनन आनंद कंद ।
मनु मरकत मनि को डवा लैये जो हरिचंद ॥
बरनत तिय तेरी अलकवासुकि व्याल खिआल ।
हरिहर हरत समीर मन मरत सुनत धै जाल ॥
अलकरहीझुकिकुटिलगहितियमुखअतिअनुमान
दयो ओपि मनु गरलकौं लए चंद चौगान ॥७६॥
बिसहरि सौं लटसौ लपटिमोमन हठिलपटात।
कियो आपनो पाइहै तू तिय कहा सकात ॥
सादे झीने घूँघटनि अलक झलक अनुमानि।
सोवत ससि पर सेस जनु स्वेत पिछौरी तानि ॥
अरुन चीर के घूंघटे झलके अलक सुढार ।
मनु सोहाग सर में परेरुचि सेवार शृंगार॥८१॥
घूघट प्रीति दुकूल के झलकत अलक सोहाय ।
मनु अनुराग समुद्र में विसहरि विरह नहाय ॥

अलक भाल केसरि सनौ घूंघट हरित सोहात ।
मनु पुरइन के पातपर उरग सारदू न्हात ॥८३॥
घूंघट नील निचोल में लट लटकी तियभाल ।
लरत चन्द्रमा राहु चलि बीच करत मनु व्याल ॥
लपटि मुबारक लट रही माथि चावर चारु ।
मनु फनि बैठे चन्दपर चन्दन चौकी डारु॥८५॥

इति अलकशतकम् ।

तिलशतक।

दोहा।

गोरे मुख [illegible] तिल लसे ताहि करों परनाम।
मानहुं चन्द बिछाय कै बैठे सालिगराम ॥ १ ॥
मुखतिललिख्योबनायविधि ताहि न जानै कोय।
एकै अच्छर प्रेम को पढ़ै सु पण्डित होय ॥ २ ॥
गोरे मुख पर तिल लसत मेटत है दुख द्वन्द।
मानहुं बेटा भानु को रह्यो गोद लै चन्द ॥ ३ ॥
चिबुक कूप रसरी अलक तिल सुचरस द्वग बैल।
बारी बार शृङ्गार की सींचत मनमथ छैल ॥४॥
अलक डोर बंसी सु तिल छवि जल बसुधा बाल
रूप चटोरा मीन द्वग आइ फसत ततकाल॥५॥
तिल तरुनी के चिबुक में सो आरसी अनूप।
मन मुख देखि आपनो सूझै काम अनूप ॥ ६ ॥
काजर कजरौटीन तें लीजै द्वगन लगाय।
यहतिलकाजरचिबुकमें बिधि रचि धरो बनाय॥

सुमन बसावत तिलन में यह जानत सब कोय
तिल जु बसावत सुमन को नेह नवेली होय ८

तियकपोलपर तिल लसत चमकत बदन अनूप।
मानहु दामिनि मे लसत महामोह को रूप॥९॥

तिय कपोल पर तिल लसत यह म . ानिकोय
सोम अंक में सीत निसि रह्यो सकुचि कै सोय॥

रसना रस अधरन परसि द्दगन रूप मन साति।
सबन देत है सव कछू तिल चिन्ता वहु भांति॥

मन जोगी आसन कियो चिबुक गुफा में जाय।
रह्यो समाधि लगाय कै तिल सिल द्वारे लाय॥

इन्द्र धनुष सोइ आड़ है हसन दामनी एह।
लट चुरवा तिल गाल पर मन मोहन को मेह॥

अरु तिल के खंडन किए होत चीकनी देह।
ऐसे तिल जु कपोल पर देखे लगी सनेह॥ १४॥

अलक डाभ तिल गाल यों अँसुवन को परवाह।
नींदहि देत तिलंजुली नैना तुम विनु नाह॥

नित तिल सालिगराम को अँसुअन न्हावत नैन
मांगत पलक प्रणाम करि पिय देखन दे चैन॥

तिलकपोलकंचनतुला इक पलरा तिल डारि।
तौलनकोसमकोउनहीं रह्यो बिरञ्चि बिचारि॥
और अंग सब छाड़ि के तिलही सो क्यों प्यार।
सोधकियोबिधिचिबुकमें ममता को अनुसार॥
पटिया आँगन पौर को लट छट छड़िया काम।
तिल जु चिबुक पर लसतहै सो सिंगार रसधाम॥
वोर कसौटी पर लगे रेखाह्व पुनि पाग ।
तिलजुकसौटीरीझिकी कनक चिबुक रहिलाग॥
चिबुक सरूप समुद्र में मन जान्यो तिल नाव ।
तरन गयो बूड्यो तहाँ रूप कहर दरिआव ॥
बदन चन्द मंगल अधर बुध बानी गुरु अंग ।
सुक्र दसन तिल सनि लसे अम्बर पिय रवि संग॥
बेसरि मोती मीत मन काँपै दियो लटकाय ।
तिल हबसी लट ताजनो कहै अनत क्यों जाय॥
हाससतोगुणरजअधर तिल तम दुति चितरूप।
मेरे दृग जोगी भये लये समाधि अनूप ॥ ३३ ॥
मन्दहँसन दुतिदामिनी मेह चिबुक तिलचित्त।
जो गरजी बरसी नहीं तरसी चातिक चित्त ॥३४॥

नाक ढेकुला डोल तिल अलक लेज कर मैन ।
कूप चिबुक की गाड़ परि ध्यावत पन्थी नैन ॥
छत्र तय्योना लट चमर गाल सिंहासन साज ।
सोहत तिल राजाधि सम अंग सुदेसर साज ॥
बोयो बीज सृङ्गार तिल तिय कपोल छवि खेत ।
लखि रोमाञ्च अङ्कुर उठे पिय तन में किहि हेत॥
मन्दहँसन दुतिदसनकी तिय कपोल छवि देत ।
मुख बांटे तिल चांवरी नैन बधाई लेत ॥ ३८॥
तेरे तिल को तनक लखि बैठि गयी मन अन्ध ।
अरुभ्यो वार सिंगार ज्यों बदन रूप की सन्ध॥
तो छवि बदन अनूप लखि पलकै करैं सलाम ।
कारे तिल को चाखि के लोचन भए गुलाम ॥
क्यों न होय प्रभु जगतको सम्पति सुक्खनिधान।
जा दुख तें द्विजराज को दीनो है तिल दान ॥
पानिपभय्योकपोलविधि तहँ तिल धय्यो बनाय।
मुंह लावन नहिँ पावई मन चेटी मड़राय॥४२॥
बरुनी तरकस दुहुं दिसा भ्रू धनु लोचन भाल ।
अलकसिल अति लसतहैं तिल कपोल पर ढाल॥

ज्यों निसिदिन शिवकी सदा शिवा रहति अरधंग।
त्योंहीं मुख पर तिल लसै ससिकै सदा निसंक॥
जग देखत अँग चाँदनी भयो सु तिल अँधियार।
तिलतिलमेटतरातिनहिँ भयो सकल उजियार॥
काम जारि कीनी भसम बिरही मानति नाहिँ।
जानतहैं जियतो रह्यो मुख तिल क्वैला माहिँ॥
अलक खुलीले काम को भई खेल को चाड़।
टारे टरत न गेंद तिल पर्यो चिबुक की गाड़॥
तिलचारो पानिपसलिल अलक फन्द पल जार।
मन पच्छी गहि कै किते डरे श्रवन पेडार॥४८॥
क्यों सकुचति है सुन्दरी घूंघट सों मुख काढ़।
ससि सम तेरो मुख तुल्यो भयो एक तिल बाढ़॥
रूप सिंधु में बहत है मनि को उतरो जाइ।
तिल जलालिया पथर है गाल कहर दरियाइ॥
मुखचन्दहिनिजजानिकै तिलसिंगाररह्योजानि।
हंसनिहास्यरसआपुही वसी निकट हितजानि॥
सोभित तिल जु कपोल पर मोपै कह्यो न जाय।
जानु यहै मुख कमल पर भौंरा बैठो आय॥५२॥

तिल कपोल पर सोहई यह मति जानहु जीय।
तिय हिय लोचन तारिका देखन निकसी पीय॥
पानिप भरो कपोल यह सुरसरि ज्यों जगदीस।
तिल नहिँ तामें देखिये बूड्यो मन को सीस ॥
तेरे मुख को देखिकै कमल पर्‌यो जल जाय ।
अरु तिल को बेहोस करि अलि राख्यो बैठाय॥
तेरे मुख को देखि ससि कारिख लई लगाय ।
नाम कलंकी ह्वै गयो घटे बढ़े पछताय ॥ ५६ ॥
दृग काजर रंजक भरे अलक फिरंग बन्दूक ।
तिल गोली मन लच्छ को मारै मदन अचूक ॥
तिल बेंदी मन एकरा विधि को है यह रीति ।
गालपटामैंलिखिदियो मुखहि दसोदिसि जीति॥
मनमें मनु चितई जबै गर्‌यो दसन छद गाल ।
तिल न होय यह स्यामजू नीलपर्‌योतेहिकाल ॥
तिलनहिँमुहरबनायकै मुखहि दई विधि आप।
तातें सबकै दृगन पर करी तारिका छाप ॥६०॥
मृगमद नाहिन मृगन में ऊढ़त है दिन राति।
तिल तरुनी के चिबुक में सोई मृगमद भाँति॥

छई रोग मन को भयो कर देखी सब मूर ।
मोती जस्यो मृगांक तिल तासों ह्वै है दूर ॥ ६२॥
होरी खेलै मैन नित अधर गुलाल सुधार ।
तिल चोया की चहबचा देखत मन दिय डार ॥
मन मुख बैना कर सबै लोगन को ललचाहिँ ।
जिततित ते मगलोहज्यों तिलचुम्बक तनजाहिँ॥
तिल तारो चिबुकहि लग्यो क्यों करिये एतबार ।
मनकी तारी ज्यों लगे खुलै सरूप भण्डार॥ ६५॥
रती स्याम तिल पायकै तुलो कनक सम जाय ।
देखो गति जो चिबुक की अतुलित भो तिलपाय॥
विधि कपोल ठिकिया करी तहँ तीधरो बनाय।
यह मन क्षुधित फकीर ज्यों रहै टकटकी लाय॥
निसि सो सीसा सोधिकै कान कोठारी ताय ।
तिलक कियोहै गाल में लखि जात बिचु जाय॥
तिल गुटिका तिय गालमें जितचाहै तितजाय।
नैन पैठि हिय पैठिकै मनमें बैठो आय ॥ ६९ ॥
तिलकाजरचिबुकैपस्यो जिन अँखियन में आय ।
ते अँखियाँ ताही बसी कोउ न सकै लखाय ॥

तेरो तिल वो तिलोत्तमा तौल तुले सम जाय ।
वह उठिके स्वर्गहि गई ते भुमि रही घिराय ॥
सिद्धिपीठिसुखससिकियो ओमो तिल गजचाम ।
काम जपै जै कामना शिव सों करु संग्राम॥७२॥
बेनी नदी सिंगार की लट बरहा दुहुं ओर ।
चिबुक खेत तिल बीज ये सींचे काम किसोर॥
जगमोहन काजर सु तिल दियो विधाता तोहि।
जब २ आँखिन में परे मोहि लेत मन मोहि॥
तिय को मुख सुन्दर बन्यो बिधि फेरयो परगार।
तिल जु बीच को बिन्दु है गाल गोल इक ढार॥
जिय जो हुतो सो तिल भयो तिलजु ह्वै गयोपीव।
जिय को तिल २ जीव को त्योंही लाग्यो पीव॥
चावर है गेहूं रहे कबौं उरद ह्वै आय ।
कबहूं मुद्गर चिबुक तिल सरसों देत फुलाय॥
या मिसि पीय कपोल को कहै आंगुरी लाय ।
अधर मिठाई लेन को चेटी लागी पाय ॥७८॥
तिलक दण्ड दृग पात है नासा तिल को फूल।
तिलजुचिबुकपरतिलफरयो यहै नेह को मूल ॥

तिल तरुनी के चिबुक में कापै बरनो जाय ।
बचन सुननको निकट मनु कोइलि बैठी आय॥
छाड़ि २ के लेत हैं चेटी तिल मुख माहिँ ।
मुखमन तिल चेंटी गही क्योंही निकसत नाहिँ॥
विधितिलकीनोचिबुकपर मनौ दिठौना दीन्ह ।
देखततिलजियटरतनहिँ सबको टोना कीन्ह ॥
रोमावलि बेनी भृकुटि अलक स्याम छवि रास।
सब तें तिल भारी भयो चिबुक गाड़ पर पास॥
सैन बैन सब साथ है मन में सिच्छा भाव ।
तिल आपन शृङ्गार रस सकल रसन को राव ॥
बेनी गज नैना तुरँग लट वैरष फहराइ ।
तिल आपुन शृङ्गार रस सकल रसनि को राय॥
बांधि दिए हैं छोड़ि के मुक्ति दिए लटकाय ।
तिल कलियुग के राज में दई अनीत चलाय ॥
हासश्वेतदुतिपीतमुख अधर लाल तिल स्याम ।
रंग परसपर छवि बढ़े ससि ते मुख अभिराम॥
अधर बिम्ब दाख्यो दसन तिल जामुनि सरसाइ।
रूप लवन अति सँग बन्यो स्वाद न बरनो जाय॥

बदन सरोवर रूप कों तिल मनु तहां तराय ।
चिबुक गाड़ की भौन में पर्‍यो न निकार्‍यो जाय॥
मोहन काजर काम को काम दियो तिल तोहि।
जब २ अँखियन में परै मोहि लेत मन मोहि॥
उर सरिता बिच तिल बन्यो जोवन लहरै लेइ।
बिरही डूब्यो जात है सीस दिखाई देइ ॥९१॥
तिल एकै देखो बदन चुपर्‍यो तनिक फुलेल ।
मैं मन चुपर्‍यो आपनो वाही तिल को तेल ९२
जगमोहन काजर सु तिल दियो विधाता तोहि।
एकै दिल के देखते मोहि लियो मन मोहि॥९३॥
गोरी के मुख एक तिल सो मुहि खरो सुहाइ।
मानहुं पंकज की कली भौंर बिलंब्यो आइ ९४
मोहनमुखपरतिलनिरखि मैं करि जानो खेल ।
अब मुहि जारत रैन दिन वाही तिल को तेल ॥
गौरबदनतिलस्यामसँग दरस मदन मद जाइ ।
केसरिरँगचिरमीगिरी जनु तिल तनिक लखाय॥
विषयनामविख्यातजग तिय तिल सकल बनाय.।
तिलन दयाल कपोल बल विषको चिन्ह लखाय॥

बाल दयाल विसाल छवि तिल कपोल परताप।
जगत करन मनु तिल दई जगत विषै की छाप॥
नैन महल बरुनी सुचिक पुतरी मनसद साज।
तिल तकिया तामें सुमन दै बैठो महराज॥९९॥

सोरठा।

तिल नहिँ हबसी जान, चेरो राजा रूप को।
आनन कंचन खान, बैठो चौकी देन को॥१००॥

इति तिलशतकं संपूर्णम्॥